हरी-भरी धरती

सुनीता अग्रवाल

जब हरी-भरी होगी धरा
हर ओर होगा जीवन खुशियों भरा।
अंग-अंग में रंग भरा।
रंगों की होगी बौछार।।

पेड़ों को आज काट कर।
धरती रख दी उसने उजाड़ कर।।
अपने स्वार्थ की देखो खातिर।
मानव प्रकृति को बर्बाद रहा कर।।

प्रकृति ने हमें खाद्य-संपदा देकर।
किया है देखो महान उपकार।।
हम ही न बन पाए समझदार।
स्वयं को क्यों नहीं करते खबरदार।।

प्रगति के हमने नाम पर
प्रकृति का कर दिया निरादर।।
पहाड़, झील, झरने, नदियां, सरोवर।
सब होते हम पर न्यौछावर।।

इनकी सुरंदरता देख देखकर।
खुश होते इनको निहार कर।।

अपने आप को तरो-ताजा कर।
खुशियां बेतहाशा पाकर।।

प्रकृति की खूबसूरती निहार कर।
अपना जीवन सफल बनाकर।।
उसके प्रति अपना फर्ज निभा लिया।
उसको अपने बच्चों-सा प्यार कर लिया।।

प्रकृति सदा अच्छा ही परिणाम देगी।
उसके खजाने में कोई कमी नहीं होगी।।
पर खजाने का रक्षक तो हमें बनना होगा।
प्रकृति की खूबसूरती को और निखारना होगा।

सोना-चांदी, हीरे-मोती।
सब कुछ इसके वक्ष-स्थल पर।।
इतनी अनमोल, अतुल्य संपदा पर।
इतराए क्यों न यह इन पर।।

प्रकृति हमसे वादा करती।
हमको सब कुछ है वह देती।।
हमको सब सुख-समृद्धि ऐश्वर्य है देती।
कैसे इसे संजोये है यह।।

कितना निर्मल कितना उज्जवल।
झर-झर झर-झर बहता है जल।।
कल-कल कल-कल करता है जल।
पर्वत की श्रृंखलाओं से आता है जल।।

उद्गमित हुआ जहां से जल।
कितना उजला होता वहां यह जल।।
जैसे-जैसे नीचे आता।
वैसे-वैसे गंदला होता जाता।।

पानी अमृत, पानी जीवन।
पानी बिन कैसा जीवन।।
जैसे सांस की कीमत जीवन।
वैसे ही यह अनमोल पावन।।

पानी है अनमोल, पानी का न करो
मोल तुम।
इसकी कीमत जानो तुम।।
व्यर्थ कभी न इसको करो तुम।
जरूरत होजितना, उतना उपयोग करो तुम।।

भावी जल संकट के लिए होंगे जिम्मेदार तुम।
अगर यूं ही इसे व्यर्थ गवाँओगे तुम।।
जिनको मिलता आसानी से जल।
उनके लिए कुछ नहीं है यह जल।।

जल संकट के कारण ही।
उजड़ गई थी दुनिया उनकी।।
अपने प्यार की खातिर ही।
दशरथ मांझी ने अकेले राह निकाली।।

पहाड़ काटकर राह निकाली।
पानी के बिन न कोई जान गंवाए।।
यही सोच पहाड़ों में राह बनवाए।
अकेले ही एक असंभव काम कर
"माउंटेन मैन" कहलाए।।

वर्षा जल का संचयन करो।
भूजल स्तर अधिक करो।।
पानी हमको देता जीवनदान।
इसको बचा कर बनो महान।।

सपंर्क करें:
सुनीता अग्रवाल,
KG-13 न्यू कवि नगर
गाजियाबाद।
मो. 7503363166